ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST \ Vol. 1 \ Issue 2 \ September 2023
Available online at: www.ijmrast.com

दर्शन का ज्ञान शिक्षक के लिए आवश्यक क्यों ?

डॉ. स्वाति प्रिया

न्यू होराइजन कॉलेज ऑफ एजुकेशन सिमरिया, टीएमबीयू, भागलपुर, बिहार

Email: swatipriya809@gmail.com

सारांश:

दर्शन, जिसे 'दर्शन शास्त्र' भी कहा जाता है, मानव जीवन के अद्वितीय अनुभवों, विचारों, और मूल्यों की गहराईयों में जानकारी प्रदान करने का कार्य करता है। यह विशेष रूप से शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें छात्रों को मानवता, नैतिकता, और सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने में मदद करता है।

दर्शन का ज्ञान शिक्षकों को विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, और नैतिक परंपराओं को समझने में सहायता प्रदान करता है। इसके माध्यम से वे अपने छात्रों को समयसमय पर नई - सोच और दृष्टिकोन प्रदान कर सकते हैं, जिससे वे समाज में ठोस नागरिक बन सकें। यह उन्हें शिक्षा में नैतिकता, सामाजिक न्याय, और सहानुभूति के मूल सिद्धांतों की प्रेरणा देता है, जिससे छात्र समाज में उपयुक्त रूप से योगदान कर सकें।

इसके अलावा, दर्शन का ज्ञान शिक्षकों को छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्मसमर्पण-, और सहयोग के लिए सहायता प्रदान करता है। यह उन्हें छात्रों के साथ अध्ययन करने की प्रेरणा देता है और उन्हें उच्चतम नैतिक मानकों की प्रेरणा प्रदान करता है।

समापनस्पद शिक्षक वह है जो न केवल अकादमिक ज्ञान का प्रशासन करता है, बल्कि छात्रों को जीवन के मूल्यों और दर्शनिक दृष्टिकोन से भी परिचित कराता है, जिससे वे समृद्ध, समग्र और समरस व्यक्तित्व के साथ समाज में सहयोग कर सकें।

मुख्य शब्द : *दर्शन, शिक्षक, शिक्षा, नैतिकता, सामाजिक मूल्य, आदि।*

प्रस्तावना:

शिक्षा समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसमें शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षक न केवल ज्ञान के प्रति संवेदनशील होता है, बल्कि वह छात्रों को नैतिकता, संस्कृति, और मानवता के मूल्यों से अवगत कराता है। दर्शन शिक्षा में नैतिकता, धार्मिक ज्ञान, और मानवता के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हो सकता है।

दर्शन का ज्ञान शिक्षकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें विभिन्न धार्मिक, नैतिक, और दार्शनिक सिद्धांतों की समझ प्रदान करके छात्रों को मानवता और समरसता के मूल्यों के प्रति जागरूक करने में मदद करता है। इसके माध्यम से शिक्षक छात्रों को विचार करने, खुद पर सवाल करने, और सामाजिक परिवेश में समरसता और सहयोग का माहौल बनाए रखने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

दर्शन शिक्षा छात्रों को विभिन्न धर्म, दर्शन, और तात्त्विक सिद्धांतों के साथ जोड़ने में मदद करता है, जिससे वे अपने जीवन में एक बेहतर दिशा में बढ़ सकें। यह उन्हें विचार करने और सोचने के कौशल में सुधार करता है और उन्हें जीवन के गहरे सवालों के साथ निरंतर निपटने की क्षमता प्रदान करता है।

शिक्षा के अभ्यास अर्थात् शिक्षण के लिये ही अध्यापक है। इसलिये दर्शन अध्यापक को भी राह दिखाता है। यही नहीं हरबार्ट स्पेन्सर का विचार था कि ***"सच्चे दार्शनिक ही सच्ची शिक्षा को देते हैं"***। अध्यापक को सच्ची शिक्षा अर्थात् उत्तम एवं उपयोगी शिक्षा देना चाहिये। इसीलिये उसे दर्शन का ज्ञान आवश्यक है। बिना दार्शनिक हुये कोई सच्चा अध्यापक हो ही नहीं सकता। बिग्स का भी विचार था कि- ***"यहाँ (पाठ्यक्रम निर्धारण में) शिक्षा को बहुत अधिक नेताओं की आवश्यकता है- ऐसे नेता जो एक दृढ़ एवं विस्तृत दार्शनिक विचार धारण करते हैं।"*** इस प्रकार पाठ्यक्रम निर्धारक अध्यापकों में विग्स ने दार्शनिक विचारों की अपेक्षा करते हैं। फ़िक्ते का भी विश्वास था कि - *'शिक्षा की कला तब तक पूर्णतया स्पष्ट नहीं हो सकती जब तक कि दार्शनिक प्रश्न उलझे हैं।'* इस प्रकार शिक्षा की कला को जानने के लिये दर्शन का ज्ञान चाहिये शिक्षा की कला अध्यापक दिखाता है, अतः उसे दर्शन का निश्चित रूप से ठोस ज्ञान आवश्यक है। थाम्पसन का भी विचार था कि शिक्षक के लिये दर्शन का ज्ञान अतीव आवश्यक है।

क्योंकि शिक्षक को शिक्षक एवं दार्शनिक दोनों की भूमिका अदा करनी है। शिक्षक अगर दर्शन विहीन है तो उसकी शिक्षा निरर्थक हैं और रास के मतानुसार अगर सचमुच कोई दार्शनिक है तो वह स्वभावतः शिक्षाशास्त्री बन जाता है। इस प्रकार रास का विचार है कि दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री में अन्योन्याश्रय है सम्बन्ध है।

शिक्षा और दर्शन :

दर्शन शिक्षक का निर्माणक है और शिक्षक दर्शन का प्रसारक। वह दर्शन प्रसारण अपने छात्रों के मध्य करता है और उस प्रसार से छात्र लाभान्वित होते हैं। - शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। प्रत्येक शिक्षक के अपने जीवन के आदर्श एवं उद्देश्य भी होते हैं। इन्हीं आदर्शों एवं उद्देश्यों के अनुरूप वह बालकों को आकृष्ट करता है। शिक्षक के ये आदर्श एवं उद्देश्य तब तक नहीं बन पाते जब तक कि उसके जीवन का दर्शन न हो। इसीलिये शिक्षक को शिक्षक एवं दार्शनिक दोनों की भूमिका अदा करनी है। इसीलिये रास ने लिखा है कि विश्व के सभी महान दार्शनिक शिक्षक भी हुए हैं। एक कहावत भी है जैसा पुजारी वैसा मन्दिर)As the priest so is perish) ठीक उसी प्रकार जैसा अध्यापक होगा, वैसा उसका शिष्य।

अध्यापक ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा देता है। ज्ञान और विज्ञान दर्शन के विषय हैं। इस प्रकार अध्यापक दर्शन से आवृत्त है। इसी दर्शनरूपी चुम्बक के प्रभाव से अध्यापक बालरूपी लोहों को प्रभावित करता है। वह बालकों को अपनी दार्शनिक ढाँचे में ढालता है। अगर अध्यापक की मान्यतायें व मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत हैं तो बालक भी सामाजिक होगा, समाज स्वीकृत आदर्शों के अनुरूप होगा।

प्रयोगवादियों ने शिक्षक को इसीलिए मित्र, दार्शनिक एवं निर्देशक)friend, philosopher and guide) माना है। उनका मत भी है कि अध्यापक को दार्शनिक होना चाहिये। यही नहीं शिक्षक के जीवन व शिक्षा सम्बन्धी कोई .ऐसा कार्य है ही नहीं जिसका सम्बन्ध दर्शन से न हो, चाहे पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, पाठ्यपुस्तक, शिक्षा उद्देश्य जो कुछ भी हो, सबका सम्बन्ध दर्शन से है।

रास ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि एक विद्वान का मत था कि -***प्रत्येक व्यक्ति जन्म के समय ही या तो थोड़ा बहुत प्लेटोपंथी है या थोड़ा अरस्तूपंथी। और अध्यापक तो एक जागरूक विद्वान एवं विचारवान है, वह क्यों नहीं तब दार्शनिक होगा। दर्शन का ज्ञान शिक्षक के लिए आवश्यक क्यों ?***

दर्शन से शिक्षक को लाभ :

- दर्शन से शिक्षक की ज्ञान वृद्धि होती है: दर्शन ज्ञान विज्ञान का पुंज होता है। उससे अध्यापक के ज्ञान में वृद्धि होती है और विचारों में परिपक्वता आती है। दर्शन प्राकृतिक, वैचारिक, ईश्वरीय एवं जीवन सम्बन्धी ज्ञान देता है, जिससे शिक्षक लाभान्वित होता है।
- दर्शन से शिक्षक का व्यक्तित्व ऊँचा होता है: दर्शन के माध्यम से नोति सम्बन्धी बातें परोपकारिता, व्यावहारिक, कुशलता, आत्मविश्वास आदि गुणों का विकास होता है। ये उपरोक्त गुण ऐसे हैं जो मानव के व्यक्तित्व को ऊँचा बनाते हैं। इनसे चरित्र विकसित होता है और इन्हीं गुणों से युक्त चरित्रवान अध्यापक ही बच्चों का सच्चा पथ-प्रदर्शक हो सकता है।
- दर्शन द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया में सहायता मिलती है : दर्शन शिक्षा के विविध क्षेत्रों में यथेष्ट सहायता करता है चाहे वह क्षेत्र शिक्षा का उद्देश्य हो, शिक्षण विधि हो, पाठ्यक्रम हो, अनुशासन हो या अन्य पहलू। उपरोक्त यही क्षेत्र शिक्षक के भी क्षेत्र हैं। उसे शिक्षण विधि का माहिर होना चाहिए। इसलिये उसे दर्शन की भी सहायता लेनी चाहिए।
- भावी दर्शन का निर्माण अध्यापक का दायित्व: शिक्षक ज्ञान-विज्ञान से प्रभावित होता है। अध्ययन-अध्यापन के समय उसके समक्ष अनेक विचार उठते हैं। परिस्थितियों के अनुरूप उसे नये विचारों को भी रखना पड़ता भी भावी दर्शन के जन्मदाता है। यहीं वह बालकों को भी ज्ञानवान बनाता है, बनते हैं। इस प्रकार नये दर्शन के निर्माण का भार अध्यापकों के ही कन्धों पर है।
- शिक्षक की तार्किक एवं अन्वेषण शक्ति का विकास : विभिन्न विचारधारओं के बीच रमनेवाला अध्यापक और गम्भीरतापूर्वक सोचकरनयी बातों का सृजन करता है। दर्शन से उसे तर्क मिलता है, वह तार्किक होकर दर्शन की विचारधाराओं का विवेचन एवं अन्वेषण करता है। नयी बातों की खोज करता है। अध्यापक यही प्रवृत्ति अपने बच्चों में भरकर उन्हें भी तार्किक एवं अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति का बनाता है।
- जब शिक्षा और दर्शन का घनिष्ठ सम्बन्ध है तो अध्यापक और दर्शन का भी आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है। क्योंकि शिक्षा अध्यापक ही देता है। दर्शन शिक्षा की अमूल्य सहायता देता है तो वह शिक्षक को भी अमूल्य सहायता देता है उसे विचारशील विवेकशील, ज्ञानवान, मूल्यों का सृजक आदि दर्शन बनाता है। इसलिए शिक्षक को दर्शन का ज्ञान अवश्य रखना चाहिए।
- अध्यापक को अपना जीवन उपयोगी बनाने के लिए दर्शन की सहायता लेनी चाहिए। क्योंकि दर्शनयुगानुसार प्रगतिशील विचारों एवं क्षेत्रों को प्रस्तुत करता है। जिसे अपनाकर अध्यापक अपना, अपने छात्रों एवं समाज का जीवन उपयोगी बना सकता है।

- आर्थिक दृष्टिकोण से भी दर्शन सहायता दे सकता है, क्योंकि शिक्षा क्षेत्र में आर्थिक दृष्टिकोण भी आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि से ही योजनायें बनती है; इसकी जानकारी अध्यापक या आचार्य को रखनी चाहिए।
- अध्यापक को राजनीतिक व्यवस्था एवं दर्शन के क्षेत्र में भी इससे सहायता प्राप्त हो सकती है। विभिन्न दर्शनों एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं के परिचय को पाकर शिक्षक का यह क्षेत्र विकसित होता है।
- शैक्षिक दृष्टिकोण से तो दर्शन शिक्षक का सर्वाधिक उपयोगी उपकरण है। इसके बिना वह चल ही नहीं सकता। इससे शिक्षा के विविध क्षेत्र एवं विद्यार्थियों का सम्यक् निर्माण होता है।
- दर्शन से शिक्षक की सांस्कृतिक दृष्टिकोण की भी सम्यक् शिक्षा प्राप्त होती है। अध्यापक संस्कृति के विविध पक्षों की सही जानकारी दर्शन के माध्यम से ही प्राप्त करता है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार शिक्षा क्षेत्र में शिक्षक प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहता है तो उसे दर्शन का गहन ज्ञान रहना चाहिए। शिक्षा की पूर्णता के लिए शिक्षक को दर्शन का भी पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। बिना इसके वह उसकी शिक्षा व्यर्थ होगी और वह व्यक्तित्वहीन | अध्यापक की विचारशक्ति से बालक प्रेरणा प्राप्त करतेहैं। अध्यापक दर्शन के माध्यम से अपनी विचारशक्ति निर्मित करते हैं। इस प्रकार दर्शन का अध्ययन अध्यापक के लिए आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

[1]. अग्रवाल एस. (2007). फिलोसॉफिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, ऑथर प्रेस, नई दिल्ली।

[2]. एल्टेकर (1975). एजुकेशन इन एनशियन्ट इंडिया (7वां सं.). वाराणसी: मनोहर प्रकाशन |

[3]. बघेका, गिजूभाई. (1950). दिवास्वप्न एन एजुकेटर्स रेवरी अनुवादित चितरंजन पाठक. एनबीटी नई दिल्ली।

[4]. ब्रूबैशन जे. एस. (1969). मॉडर्न फिलोसॉफिज ऑफ एजुकेशन. न्यूयॉर्क: मैकग्रा हिल को. इंक,

[5]. चौबे एस. पी. (1988) इंडियन एंड वेस्टर्न एजुकेशन फिलॉस्फर्स, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[6]. धवन, एम. एल. (2005). फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन दिल्ली, संपादक, ईशा बुक्स।

[7]. इग्नू (2014). शिक्षा के विचारकः भारतीय (इकाई-3), खंड-2, एमईएस-051- 'शिक्षाः दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण'. एम. एड.. इग्नू।

[8]. जोशी एस. (2006). ग्रेट इंडियन एजुकेशनल थिंकर्स, ऑथर्स प्रेस, नई दिल्ली।

[9]. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन, आधिकारिक कृष्णमूर्ति साइट. कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1974) ऑन एजुकेशन, पांडिचेरी, भारत: अखिल भारतीय प्रकाशन।

[10].कृष्णमूर्ति, जे.(1953). एजुकेशन एंड द सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ, लंदनः विक्टर गोलान्क्ज लिमि.

[11].कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1956). 5वां पब्लिक टॉक, 18 मार्च, बॉम्बे।

[12].कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1962), 2 पब्लिक टॉक, 7 जून, लंदन। कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1964), दिस मैटर ऑफ कल्चर, लंदन: विक्टर गोलाक कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1975). डायलॉग ऑन एजुकेशन, ओजाई।

[13].नैयर, पी. आर. डेव, पी. एन.. एंड अरोड़ा, के. (1982). टीचर एंड एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, नई दिल्ली।

[14].पचौरी, जी. (2010). ग्रेट एजुकेशनिस्ट. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

[15].पांडे, आर. एस..(1997). ईस्ट-वेस्ट थॉट्स ऑन एजुकेशन, होराइजन पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।

[16].पांडे, ममता. (2008). गिजूभाई ऑन एजुकेशन।

[17].पानी, आर. एस. (1987). इंटीग्रल एजुकेशन, थॉट एंड प्रैक्टिस. नई दिल्ली. आशीष पब्लिशिंग हाउस।

[18].पानी, एस. पी एंड पटनायक, एस. के. (2006). विवेकानंद, अरबिंदो एंड गांधी ऑन एजुकेशन, नई दिल्ली: अनमोल पब्लिकेशन प्रा.लिमि.

[19].आर. एस. (1997), ईस्ट-वेस्ट थॉट्स ऑन एजुकेशन, होराइजन पब्लिकेशंस, इलाहाबाद। शेहसाद, ए. (2006). एजुकेशनल थिंकर्स ऑफ इंडिया, अनमोल पब्लिकेशंस प्रा. लिमि, नई दिल्ली।

Cite this Article

***डॉ. स्वाति प्रिया, "दर्शन का ज्ञान शिक्षक के लिए आवश्यक क्यों?"**, International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 1, Issue 2, pp. 08-10, September 2023. **Journal URL:** https://ijmrast.com/*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.